

ज़िकरे इलाही

वक़्त (सम्य) का बेहतर
इस्तेमाल

eCard



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ज़िकरे इलाही

ज़िकरे इलाही सम्य के इस्तेमाल का बेहतरीन ज़रिया और
रेहमात व बरकत कि वजह है। अल्ला ताला फ़रमाता है:

فَاذْكُرُونِي أَذْكَرُكُمْ (البقرة: 152)

"पस तुम मुझे याद करो में तुमको याद करुंगा"

नबी (ﷺ) हर सम्य अल्लाह का ज़िकर करते थे।

(صحیح مسلم: 826)

हमारी ज़िन्दगी का हर लम्हा (छड़) बहुत कीमती है इसलिए हमें
इस्से पूरी तरह फ़ायदा उठाना चाहिए, इसके लिए नीचे लिखे
हुए ज़िकर आसानी के सम्य किये जा सकते हैं, जैसे :

सिरफ़ एक मिन्ट में हम पढ़ सकते हैं

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

50 से ज़्यादा बार

☆ नबी अकरम (ﷺ) एक दिन में सत्तर से सो बार तक
अस्तग़फ़ार करते। (صحیح البخاری: 6307)

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

30 से ज़्यादा बार

ये जन्नत के खज़ानों में से है। (صحیح البخاری: 6384)

حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ (صحیح مسلم: 2704)

31 से 33 बार

☆ हज़रत इब्राहीम (अ) ने पढ़ा जब इन्हें आग में फेंका जा
रहा था तो अल्लाह ताला के हुकम से आग गुल व
गुलज़ार बन गई। (صحیح البخاری: 4563)

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ

20 से 22 बार

☆ रसूल अल्लाह (صلی اللہ علیہ وسلم) को जब कोई कठनाइ पड़ती तो

पढ़ते | (सनन الترمذی: 3524)

اللَّهُ اللَّهُ رَبِّي لَا أُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا

20 से 21 बार

☆ रसूल अल्लाह (صلی اللہ علیہ وسلم) बिनते अमीस(र) को तकलीफ के

सम्य के लिए ये कल्मात सिखाए | (सनन أبي داؤد: 1525)

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ

25 से 30 बार

☆ ये दो कल्मे, ज़बान पर हल्के, वज़न में भारी और रेहमान को

मेहबूब हैं | (صحیح البخاری: 6406)

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ

18 से 20 बार

☆ ज़्यादा मात्रा में दरुद का पढ़ना हर दुख व ग़म से

छुटकारा और बख़शिश का ज़रिया है | (सनन الترمذی: 2457)

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ

مِنَ الظَّالِمِينَ

16 से 18 बार

☆ हज़रत यूनुस(अ)ने मछली के पेट अपने रब को इन

शब्दों से पुकारा तो अल्लाह ने इन्की दुआ कुबूल की

और इन्हें ग़म से छुटकारा दिया।

(الانبیاء: 87,88) (सनन الترمذی: 3505)

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ

وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

8 से 10 बार

☆ जिस इन्सान ने दस बार ये कल्मात पढ़े तो इसे हज़रत

इस्माईल की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद करने

का सवाब मिलेगा | (सनن أبي داؤد: 5077)

ہجرت

ابو دردا

(رضی اللہ عنہ) سے

ریوایت ہے کہ نبی

کریم (صلی اللہ علیہ وسلم) نے فرمایا

:"کجا میں تمہیں اک ایسے امال

کی خبر نا دوں جو تمہارے مالے

میں سب سے اچھے ہیں، جو تمہارے مالیک

کے نزدیکیک بہت پاک ہیں، جو تمہارے درجات

کو سب سے اونچا کرنے والا ہے، جو تمہارے لیے

سونا اور چاندی خرچ کرنے سے بہتر ہے اور تمہارے

لیے دشمن سے لڑنے سے بہتر ہے کہ تم انکی گردنیں

مارو اور وہ تمہاری گردنیں کاٹیں۔ انہوں نے ارزا کیا:

زرر بتائیں، آپ (صلی اللہ علیہ وسلم) نے فرمایا :اللہ تالا

نے فرمایا :اللہ تالا کا ذکر،"اور ماز

نے فرمایا :اللہ تالا کا ذکر،"اور

ماز (رضی اللہ عنہ) نے بیان کیا:"ذکرے

لاہی سے زیادہ کوئی چیز

اللہ تالا کے ازاب

سے بچا دینے والی

نہیں۔ (جامع ترمذی)

مئی 2018 | ایڈیشن: 6

الهدی 'پبلیکیشنز (پرائیوٹ) لمیٹڈ

+92-51-4866125-9 +92-51-4866130-1 H-11/4 اسلام آباد، پاکستان

+92-42-35239040-41 لاہور: +92-21-35844041-2 کراچی

www.alhudapublications.org | www.alhudapk.com

www.farhathashmi.com



۰۵۰۱۰۰۵۸

